100 परसेण्ट देहभान को भस्म करने वाला कौन है?

(सिर्फ प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए)

डी.वी.डी नं. 377, वी.सी.डी. नं. 2306, रात्रि क्लास - 04.11.66, व्याख्या ता. 21.02.2017

रात्रि क्लास चल रहा था- 04.11.1966। दूसरे पेज के मध्यांत में बात चल रही थी- ब्रह्मा मुख की औलाद पवित्र ब्राह्मण नहीं बनेंगे, तो फिर तुम देवता कैसे बनेंगे? ये ब्राह्मण सो देवता बनने की बात सेकेण्ड में कितनी सहज समझाते हैं। सम्पूर्ण ब्राह्मण सो सम्पूर्ण देवता; अधूरे ब्राह्मण तो अधूरे देवता। सम्पूर्ण ब्राह्मण बनेंगे तो 16 कला सम्पूर्ण राजधानी में आवेंगे; सम्पूर्ण पवित्र ब्राह्मण नहीं बनेंगे तो 16 कला सम्पूर्ण राजधानी में थोड़े ही आवेंगे। कहाँ जावेंगे? सेकिण्ड नारायण का राज्य सतयुग में होगा; परन्तु कितनी कला कम हो जावेगी? चौथाई कला कम हो जावेगी और यथा राजा तथा उसकी प्रजा (की) भी चौथाई कला कम हो जावेगी। ये कमज़ोरी द्वैतवादी द्वापरयुग में जा करके क्लीयर होगी- वो जो द्वैतवादी पहला-2 धर्मपिता आता है, द्वैतवादी दूसरे धर्म में घसीट कर ले जावेगा, अपने संग के रंग में ले जावेगा। ये संग के रंग में आने की कमज़ोरी का फाउण्डेशन कहाँ पड़ा? संगमयुग में ही पड़ता है; इसलिए ब्राह्मण जीवन में संग के रंग की बड़ी बलिहारी है। गाया हुआ है कि सेकेण्ड में जीवन्मुक्ति- एक सेकेण्ड में जीवन में रहते हुए दुख-दर्दों से मुक्ति। कहाँ? (किसी ने कहा- संगमयुग में) संगमयुग में भी बाप जब आते हैं और आ करके धक से राजधानी स्थापन कर देते हैं। सर्वशक्तिवान बाप है या शक्तियों में कुछ कमी है? सर्वशक्तिवान बाप है, जो वर्षों/महीनों-2 तक पुरुषार्थ में नाक नहीं रगड़वाता। क्या करता है? एक सेकेण्ड में आते ही नई 16 कला सम्पूर्ण राजधानी में आत्मा को जीवन्मुक्ति की अनुभूति कराय देता है। जनक का मिसाल है। तुम सब सीताएँ हो, तुम सब सीताओं का बाप जनक। 'जन' माने जन्म देने वाला, 'क' माने जन्म करने वाला। कैसा जन्म करने वाला बाप- 16 कला सम्पूर्ण राजधानी स्थापन करने वाला बाप या कमज़ोर राजधानी स्थापन करने वाला बाप? (किसी ने कहा- सम्पूर्ण राजधानी) सेकेण्ड में विश्व की बादशाही दे देते हैं; लेकिन किसको? (किसी ने कहा- ब्राह्मणों को) कौन-से ब्राह्मणों को? (किसी ने कहा- सम्पूर्ण ब्राह्मणों को) ब्राह्मण तो नौ कुरियों के होते हैं- एक-से-एक नीची कुरी वाले, नीची धारणा स्थापन करने वाले और ऊँचे-ते-ऊँची धारणा भी स्थापन करने वाले, जो अपनी आत्मा के ही अंदर संग के रंग से अथवा जैसा अन्न वैसा मन बना करके एक सेकेण्ड में सम्पूर्ण राजधानी प्राप्त कर लेते हैं।

सो बरोबर बाबा को जाना तो बाबा से ही तो वर्सा मिलेगा ना! वर्सा किससे मिलेगा- बाबा से मिलेगा, शिवबाबा से मिलेगा या आत्माओं के बाप शिव से मिलेगा? शिवबाबा से वर्सा मिलेगा और शिवबाबा की ही बात न मानी या थोड़ी मानी, थोड़ी नहीं मानी; दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होने वालों की निशानी क्या होगी? मुरली की आधी बातें मानेंगे और आधी बातें नहीं मानेंगे। वो विधर्मी बन जावेंगे, विदेशी धर्मखण्डों में, विदेशी धर्मों में चले जावेंगे। तो बरोबर है कि बाबा को जान लिया; दुनिया में बाबाएँ तो बहुत हैं। देहधारी धर्मगुरु हैं या नहीं हैं? (किसी ने कहा- हैं) वो देहधारी धर्मगुरु जिनकी बुद्धि देह में धरी रहती है, देहधारियों का, देह के सम्बंधियों का, देह के सम्पर्कियों का संग छोड़ते ही नहीं और जिनको पढ़ाई पढ़ाते हैं, उनमें भी वो ही गुण आवेंगे या नहीं आवेंगे? (किसी ने कहा- आवेंगे) तो बोला- जैसा बाप, जैसा टीचर, जैसा गुरु, वैसा ही बाप का बच्चा, वैसा ही स्टुडेण्ट और वैसा ही गुरु का शिष्य बनेगा। अधूरों से पढ़ाई पढ़ेंगे तो अधूरी प्राप्ति होगी या सम्पूर्ण प्राप्ति होगी? (किसी ने

कहा- अधूरी प्राप्ति) हमारा बाबा कैसा बाबा है- पुरुषार्थ में आखरीन निराकारी स्टेज में टिकने वाला है या मूर्त रूप में, 'मूर्ति' माने साकार, साकार में बुद्धि धरी रहने(रखने) वाला है? हमारा बाबा तो निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी है। जिसकी यादगार सारी दुनिया में सार्वभौम है, शिवलिग के मंदिर बने हुए हैं। जिन मंदिरों में निराकारी सो साकारी मूर्ति रखी हुई है। कौन-सी? शिवलिग। बड़ा आकार लिग भी है माना साकार भी है, ऐसे नहीं कि शरीर नहीं है। बड़ा शरीर तो है; लेकिन उस शरीर की स्थिति कैसी दिखाई है? (किसी ने कहा- निराकारी) न हाथ, न पाँव, न आँख, न कान, कोई भी इन्द्रिय नहीं देखने में आती है। इसका मतलब क्या हुआ? ये मतलब हुआ कि उन इन्द्रियों से कर्म करते हुए भी देह में बुद्धि धरी हुई है, देह की इन्द्रियों में बुद्धि धरी हुई है या इन्द्रियों से बुद्धि उपराम हो गई है? उपराम हो गई है। ऐसा चोटी का पुरुषार्थ करने वाला, जैसे पहाड़ की चोटी होती है ना, सबसे ऊँची होती है, ऐसे ऊँच-ते-ऊँच पुरुषार्थ करके आत्माओं के बाप शिव समान निराकारी-निर्विकारी-निरहंकारी स्टेज धारण करने वाला है। बाबा है, आत्माओं का बाप नहीं है। क्या है? ग्रैण्डफ़ादर। आत्माओं का बाप जो सुप्रीम सोल शिव है, उसका एक ही सम्बंध आत्मा रूपी बच्चों से है। क्या? बाप और बच्चा; लेकिन ये तो शिवबाबा है। वो शिव ज्योतिबिन्दु जब साकार मुकर्रर रथ में आता है तो ग्रैण्डफादर बनता है, शरीर के साथ सभी सम्बंध निभा सकता है।

तो देखो, ऐसे साकार सो निराकार बाबा को जाना, तो यही वर्सा मिलेगा ना! क्या? सम्पूर्ण निराकारी बनेंगे या अधूरे निराकारी बनेंगे? सम्पूर्ण निराकारी माने देहभान का नाम-निशान न रहे। देहभान का नाम-निशान होगा तो देह के सम्बंधियों से लगाव ज़रूर लगेगा और देह के सम्बंधियों का संग का रंग छोड़ नहीं सकेंगे। फिर क्या होगा? पद नीचा हो जावेगा माना सूर्यवंशी कुल में नहीं आए सकेंगे। कहाँ गिरेंगे? सूर्यवंश के बाद त्रेता में चंद्रवंश ही होता है, जिसका फाउण्डेशन, कलाओं के गिरने का फाउण्डेशन सतयुग के दूसरे जन्म से ही लग जाता है। ये उतरती कला, देहभान में उतरती कला- इसका फाउण्डेशन हम अभी लगाए रहे हैं; इसलिए बाप कहते हैं- अभी मौत सामने खड़ा है। ''अभी तो मौत सामने खड़ी है।'' (रात्रि मु.ता.3.2.68 पृ.1 मध्य) मौत किसका होता है- देह का या आत्मा का? (किसी ने कहा- देह का) देह विनाशी है, आत्मा तो अविनाशी है। तो जो देह-अभिमान में अंत तक बने रहेंगे संग के रंग के कारण, अन्नदोष के कारण, तो रिज़ल्ट क्या होगा- उतरती कला के देहभान वाले धर्मपिताओं की शरण में जाना पड़ेगा या विदेही के ग्रुप में रहेंगे? (किसी ने कहा- देह वाले) जो विदेही बाप का सूर्यवंशी ग्रुप है, वो मनुष्य-सृष्टि रूपी झाड़ में वो तना नीचे से लेकर ऊपर तक सीधा जाता है- न दाईं ओर के विधर्मों में झुकता है और न बाईं ओर के विदेशी धर्मों में झुकता है। जो वाममार्गी धर्म हैं-बायाँ हाथ गंदगी साफ़ करने वाला है-(देह-अभिमान वाले) गंदे धर्मों में जाके गिरेंगे, विदेशी बन जावेंगे। ब्राह्मणों में ये गिरती कला वाले नौ कुरियों में से आठ कुरी के ब्राह्मण हैं और ये कहाँ बैठे हुए हैं, कहाँ बैठे पुरुषार्थ कर रहे हैं? संगमयुग में बैठे पुरुषार्थ करते हैं, चाहे आधारमूर्त बने हुए जड़ों में से हैं, चाहे उन जड़ों के बीज-रूप संगठन में हैं; लेकिन वो बीज-रूप संगठन भी एक जैसे बीज वाले नहीं हैं- कोई बीजों में, जिन बीजों को रुद्रमाला का मणका कहा जाता है, कोई सूर्यवंश के महीन छिलके वाले हैं, देहभान का बहुत महीन छिलका चढ़ा हुआ है, कोई चंद्रवंशी छिलके वाले हैं। सूर्य में और चंद्रमा में ज्ञान की रोशनी का फ़र्क तो पता है? चंद्रमा में और चंद्रवंशियों में, सूर्य में और सूर्यवंशियों में ज्ञान की रोशनी का कुछ फ़र्क होता है? (किसी ने कहा- होता है) क्या फ़र्क होता है? सूर्य स्वयं प्रकाशित होता है और सूर्यवंशी बच्चे भी स्वयं के मनन-चिंतन-मंथन से प्रकाशित होते हैं, अपनी आत्मा के अनेक जन्मों को जान जाते हैं; और चंद्रमा स्वयं प्रकाशित होता है या सूर्य से प्रकाश लेता है? (किसी ने कहा- सूर्य से प्रकाश लेता है) ऐसे

ही चंद्रमा को फॉलो करने वाले चंद्रवंशी किससे प्रकाश लेते हैं? या तो चंद्रमा से प्रकाश लेते हैं या तो सूर्यवंशी बच्चों से प्रकाश लेते हैं। उनको ज्ञान के जो गुरगे हैं, वो समझाने वाले, जिनकी समझ से बाप की बेहद की पहचान होती है, वो खुद नहीं समझ सकते, चंद्रमा के द्वारा नहीं समझ सकते, बाद में किसके द्वारा समझेंगे? सूर्यवंशी बच्चों के द्वारा समझना पड़ेगा। इसलिए बोला है कि तुम बच्चे, जो बेसिक ब्राह्मणों की दुनिया में दीदी-दादी-दादाएँ हैं, उनका ज्ञान-रत्नों से श्रृंगार करेंगे। कौन? तुम सूर्यवंशी बच्चे, जो ज्ञान-सूर्य के सन्मुख बैठ करके ज्ञान का भण्डार भरते हो, योगशक्ति का भण्डार भरते हो। तो वर्से में फ़र्क ज़रूर पड़ जाता है। जो सूर्य से भी नहीं सीखते, सूर्यवंशियों से भी नहीं सीखते तो उन्हें किससे सीखना पड़ता है? चंद्रमा से या चंद्रवंशियों से सीखना पड़ता है। चंद्रवंश कौन-से युग में होता है? त्रेता में होता है। तो त्रेता के जो चंद्रवंशी हैं, उनकी औलाद, उनको फॉलो करने वाले, उनकी रचना इस्लामवंशी द्वैतवादी द्वापरयुग में बनेंगे। किसकी रचना बनेंगे? इस्लामवंश वाले या उनका धर्मपिता किससे जन्म लेगा? चंद्रवंशियों से या चंद्रमा से जन्म लेगा। तो देखो, वर्से में बड़ा भारी घाटा पड़ जाता है। अभी बताओ, तुम बच्चों का क्या विचार है? किसका संग का रंग लेना है? एक बाप का संग लेना है, वो भी ऊँच-ते-ऊँच बाप, जो इस मनुष्य-सृष्टि में आ करके मनुष्य-सृष्टि के ऊँच-ते-ऊँच हीरो पार्टधारी में प्रवेश करता है। हम उस एक व्यक्तित्व का संग का रंग लेने वाले हैं, कोई दूसरी पर्सनालिटी का संग का रंग लेने वाले नहीं हैं।

तुम बोलते हो ना- इन भारतवासी हिन्दुओं को विदेशियों ने, विधर्मियों ने भटकाया है। कहाँ भटकाया है? द्वापर-कलियुग में भटकाया है क्या? इस ब्रॉड ड्रामा की रिहर्सल कहो, शूटिग कहो, रिकॉर्डिंग कहाँ होती है? (किसी ने कहा- संगमयुग में) संगमयुग में भटकाया है। किन्होंने भटकाया है? (किसी ने कहा- विदेशियों ने) उन आत्माओं ने नहीं भटकाया है जो द्वापर-कलियुग में डायरैक्ट परमधाम से उतरती हैं। वो तो सत् धाम से आती हैं। वो सत् अर्थात् सच्ची होंगी या झूठी होंगी? (किसी ने कहा- सच्ची) सत् धाम से आने वाली आत्मा शुरुआत में सत्व प्रधान होगी या तमोप्रधान होगी? (किसी ने कहा- सतोप्रधान) परन्तु वो प्रवेश किसमें करती हैं- तमोप्रधान में या सतोप्रधान आत्माओं में प्रवेश करती हैं? तमोप्रधान कमजोर आत्माओं में प्रवेश करती हैं। उन तमोप्रधान आत्माओं में भी जो ज़्यादा-से-ज़्यादा तमोप्रधान बन जाता है, उन आत्माओं के ग्रुप में प्रवेश करती हैं। जैसे इब्राहीम आता है, इब्राहीम के पीछे-2 परमधाम से और भी फॉलोअर्स आत्माएँ आती हैं। कौन-से नारायण में प्रवेश करेंगी? (किसी ने कहा- सेकिण्ड नारायण) दूसरे नम्बर का धर्मपिता, दो नम्बर का धर्मपिता; दो नम्बर अच्छा माना जाता है या अव्वल नम्बर अच्छा माना जाता है? (किसी ने कहा- अव्वल नम्बर) तो वो दो नम्बर का धर्मपिता कौन-से ग्रुप की आत्माओं में प्रवेश करता है? जो दो नम्बर के नीची कुरी के ब्राह्मण होते हैं। बेहद के बाप आते हैं, अव्वल नम्बर का ज्ञान देते हैं- गीता-ज्ञान। जो गीता-ज्ञान सर्व शास्त्रों में शिरोमणि माना जाता है। तो शिरोमणि ज्ञान देते हैं या कम कलाओं का ज्ञान देते हैं? शिरोमणि ज्ञान देते हैं। परन्तु उस शिरोमणि ज्ञान को पूरा ध्यान देकर न सुनने वाले, न समझने वाले और प्रैक्टिकल कर्म में न लाने वाले औरों-2 के संग के रंग ज़्यादा लेते हैं, औरों-2 की बातें ज़्यादा सुनते हैं, औरों-2 का अन्नदोष ज़्यादा लगाते हैं; बाप के घर में जो ब्रह्मा भोजन बनता है उसकी कदर नहीं करते हैं। तो अन्नदोष और संगदोष का असर होगा या नहीं होगा ? (किसी ने कहा- होगा) लेप-छेप आत्मा में लग जाता है और ऐसा लेप-छेप लगता है कि वो आत्माएँ कमज़ोर होती चली जाती हैं। भले ब्राह्मण जीवन में ब्राह्मण जीवन बिताय रही हैं, कहने मात्र के लिए कि हम ब्राह्मण तो हैं; लेकिन नीची कुरियों के ब्राह्मण बनते हैं या ऊँच-ते-ऊँच कुरी के ब्राह्मण बनते हैं? (किसी ने कहा- नीची कुरियों के ब्राह्मण) तो देखो, यहाँ संगमयुग में तुमको ये मायावी आत्माओं ने भटकाया हुआ है। मायावी आत्माएँ जो मायावी दुनिया को छोड़ती ही

नहीं हैं, मायावी धंधों को छोड़ती नहीं हैं, माया के पाँच विकारों को छोड़ती नहीं हैं, विकारों की गंद में ही गिरती रहती हैं। उन मायावियों के संग के रंग में रहने से तुम ब्राह्मण यहाँ संगमयुग में ही नम्बरवार भटक जाते हो; नहीं तो बाबा बताते हैं- एक से ज्ञान सुनना चाहिए या अनेकों से सुनना चाहिए? (किसी ने कहा- एक से) ''मेरे से ही सुनो। अगर औरों से भी सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा।'' (मु.ता.12.1.74 पृ.2 आदि) एक से ज्ञान सुनेंगे, एक से बातें करेंगे तो क्या रिज़ल्ट होगा- एक का संग का रंग लगेगा या अनेकों का संग का रंग लगेगा? (किसी ने कहा- एक का) तो देखो, भटकने का फाउण्डेशन ब्रह्मा के द्वारा रची हुई ब्राह्मण धर्म की नीची 8 कुरियों में ही लग जाता है और यहाँ सूर्यवंश में तो भटकने की बात ही नहीं। संगमयुग में भटकाव की शूटिंग तो होती है। बाप के सन्मुख तो भटकने की बात है ही नहीं। क्यों नहीं है? (किसी ने कहा- सर्वशक्तिमान बाप साथ है) बाप तो सर्वशक्तिवान है; लेकिन सर्वशक्तिवान बाप देह-अभिमानी साँड़ों को सुनाता है, ज्ञान देता है या जो बाप के सन्मुख बैठ करके आत्मिक स्थिति में रहते हैं, उन आत्माओं को ज्ञान देता है? (किसी ने कहा- आत्माओं को ज्ञान देता है) उन आत्माओं में कोई आत्माएँ देखने में तो ये आती हैं कि बाप के सन्मुख बैठी हैं, ज्ञान-सूर्य के सन्मुख बैठी हैं; लेकिन मन-बुद्धि रूपी आत्मा कहाँ धरी रहती है? देह के सम्बंधियों में धरी रहती है। क्यों? क्योंकि एक घण्टे बाप के सन्मुख आकर बैठते हैं और 23 घण्टे किनका संग का रंग लेते हैं? देहधारियों का संग का रंग लेते हैं। तो बुद्धि कहाँ जावेगी? देहधारियों में ही जावेगी। तो बताया, यहाँ जो मन-बुद्धि रूपी आत्मा के द्वारा बाप के सन्मुख बैठते हैं; मन-बुद्धि को ही आत्मा कहा जाता है ना! तो मन-बुद्धि रूपी आत्मा अगर बाप के सन्मुख है, बाप के विमुख नहीं है; ऐसे होता है ना कि आँखों से सामने देखते तो हैं कि बाप बैठा है; लेकिन मन-बुद्धि बाहर की दुनिया में जा रही है, देह के सम्बंधियों में जा रही है, तो उनको सन्मुख कहेंगे या ब्राह्मणों का वातावरण बिगाड़ने वालों में कहेंगे? ब्राह्मणों का जो वातावरण है, उसको भेदन करने वाले हैं; वातावरण को बनाने वाले नहीं हैं। तो किनकी भटकने की बात नहीं है? जो बाप के सामने शरीर से भी बैठे हैं, इन्द्रियों से भी सामने हैं और मन-बुद्धि रूपी आत्मा से भी सन्मुख हैं, मन में बाप के (प्रति) विरोधी संकल्प नहीं चल रहे हैं। बैठे हैं सामने और मन में बाप के प्रति, बाप के बच्चों के प्रति विरोधी संकल्प चल रहे हैं तो सन्मुख हुए या विमुख हुए? विमुख हो गए। इसलिए बताया- यहाँ बाप के सन्मुख बैठने वालों के लिए तो भटकने की बात है ही नहीं, यहाँ तो सेकेण्ड की बात है।

वो सेकेण्ड आना चाहिए। कौन-सा सेकेण्ड? जिस सेकेण्ड में जो पहली बार देखे इन आँखों से, जो इन कानों से बाप के दो शब्द भी सुने, उस सेकेण्ड में उनको दिल से ये अनुभूति हो जाए कि मेरा बाप आ गया, मेरा बाप मुझे मिल गया। वो सेकेण्ड जिसमें एक बाप के सिवाय और कोई की स्मृति न आवे, ऐसा फाउण्डेशन लग जावेगा। पहली बार का फाउण्डेशन अच्छा होगा, मकान का फाउण्डेशन/नींव अच्छी होती है तो उसके ऊपर जो भी मंज़िलें खड़ी की जाती हैं, वो मज़बूत होती हैं या कमज़ोर होती हैं? मज़बूत होती हैं। तो बाप आया तो हुआ है; लेकिन इस दुनिया में अभी गुप्त पार्ट बजाय रहा है या प्रत्यक्ष पार्ट बजाय रहा है? गुप्त पार्टधारी है। जैसे बच्चा गर्भ में आया हुआ तो है; लेकिन गुप्त पार्ट बजाय रहा है या प्रत्यक्ष पार्ट बजाय रहा है? गुप्त पार्ट बजाय रहा है। जब गर्भ से बाहर आएगा तो घर के भांतियों को भी बच्चे की आवाज़ सुनाई पड़ेगी, जिस बच्चे ने प्रत्यक्षता रूपी जन्म लिया। पड़ोसियों को भी आवाज़ सुनाई पड़ेगी, तो क्या कहेंगे- बच्चा आया या नहीं आया? आया। शंका नहीं रहेगी कि पता नहीं, पेट में बच्चा है या बच्ची है, पैदा होगा, लूला-लंगड़ा पैदा होगा, कैसा पैदा होगा, कुछ पता नहीं है। संशय है या नहीं है? (किसी ने कहा- है) अरे, जब तक पैदा नहीं हुआ है तब तक कन्फर्म है कि बच्चा आया? नहीं! ऐसे ही यहाँ भी है। अभी बाप गुप्त और बाप के बच्चे पाण्डव गुप्त। तो पक्का है कि बाप ने प्रत्यक्षता

रूपी जन्म ले लिया है? (किसी ने कहा- नहीं) अगर पक्का है तो सदाकाल निश्चयबुद्धि रहना चाहिए या अनिश्चय आता रहेगा? (किसी ने कहा- सदाकाल निश्चय) लेकिन देखने में क्या आता है? अभी-2, 9 दिन की भट्ठी करते हैं, उस भट्ठी में ही भोजन मिलता है, पानी मिलता है, बाहर जाना भी नहीं होता है, अंदर ही सब प्रकार की प्राप्ति। जैसे गर्भ में 9 महीने गुप्त रहने के टाइम पर बच्चे को सब प्रकार की प्राप्ति होती है, फिर बाहर निकलते हैं तो बाहर की दुनिया आ जाती है। ऐसे ही हम बच्चे भी ज्ञान की, योग की, ज्ञानाग्नि-योगाग्नि की भट्ठी तो करते हैं, पकते भी हैं; परन्तु पक करके जब बाहर की दुनिया में आते हैं तो निश्चय सदा कायम रहता है या निश्चय उखड़ता रहता है? (किसी ने कहा- उखड़ता रहता है) सदाकाल निश्चयबुद्धि रहते हैं या बीच-2 में परसेण्टेज में अनिश्चय भी आता रहता है? आता है या नहीं आता है? आता है। क्यों आता है? क्योंकि बाप ने अभी पूरा प्रत्यक्षता रूपी जन्म नहीं लिया है। कब लेता है? प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेता है, 'महाशिवरात्रि' गाई हुई है। कैसी रात्रि? दुनिया में ऐसी महान रात्रि, बड़ी रात्रि न कभी हुई है और न कभी होगी। ऐसी महान रात्रि में शिवबाप का प्रत्यक्षता रूपी जन्म होता है। कैसी रात्रि? अज्ञान-अंधकार की रात्रि। ऐसी अज्ञान-अंधकार की रात्रि जिसमें बाहर की 500-700 करोड़ दुनिया तो अज्ञान-अंधकार में डूबी-ही-डूबी है, पंचभूतों से बने हुए देह के देहभान में डूबी हुई है, भौतिकवाद में डूबी हुई, बाहर की दुनिया वालों को किसी को आत्मा का ज्ञान नहीं है, उनकी तो बात ही छोड़ दो; परन्तु जो कहते हैं कि हमें ज्ञान-सूर्य बाप मिला है, ब्रह्मा तन में आ करके हमको ज्ञान की रोशनी दे रहा है, हम ब्राह्मण बच्चे बन गए हैं, वो ब्राह्मण भी, सभी ब्राह्मण- बेसिक वाले हों, बेसिक ज्ञान लेने वाले या एडवांस ऊँची कक्षा का ज्ञान लेने वाले, बाप के ऊपर निश्चयबुद्धि हैं? (किसी ने कहा-नहीं हैं) अच्छा, बेसिक वाले निश्चयबुद्धि हैं? उन्होंने बाप को पहचाना? उन्होंने तो बिचारों ने पहचाना ही नहीं। ऊपर-2 का सामान्य ज्ञान ले लिया- ''मैं आत्मा बिन्दु'', ''मुझ आत्मा का बाप ज्योतिबिन्दु''; लेकिन वो ज्योतिबिन्दु इस दुनिया में कौन-से मुकर्रर शरीर में काम करता है- इस बात का उनको पता है ही नहीं। तो वो भी अज्ञान-अंधकार में हैं या रोशनी में हैं? अज्ञान-अंधकार में हैं। और जो अपन को कहते- हम भगवान बाप से एडवांस ज्ञान ले रहे हैं, ऊँची कक्षा का ज्ञान ले रहे हैं, हमने बाप को पहचाना है, हमको बाप मिला है, उनकी स्थिति भी क्या है? आज निश्चयबुद्धि रूपी बाप का बच्चा जन्म लेता है। निश्चय माने जन्म हुआ, अनिश्चय माने मृत्यु हो गई। तो जन्म-मृत्यु की दुनिया में हैं या अमरलोक की दुनिया में पक्के ब्राह्मण बन चुके हैं? अनिश्चय की दुनिया में डोले खा रहे हैं और वो अनिश्चय दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। तो तमोप्रधान बनते जा रहे हैं या सतोप्रधान बनते जा रहे हैं? अनुभव की आँख से देखें- जब शुरू-2 में एडवांस में आए थे, भट्ठी से निकलने के बाद निश्चयबुद्धि बने थे- हमें बाप मिल गया! तब स्टेज अच्छी थी या अब स्टेज अच्छी है? क्या अनुभव में आता है? वो तो दुनिया वाले भी गाते हैं- बड़ा लुत्फ़ था जब कुँवारे थे हम-तुम, बचपन था, तो बड़ा आनंद आता था। जैसे-2 बड़े होते गए, दुनिया वालों के संग के रंग में आते गए, वैसे-2 वो बचपन की दुनिया की बातें स्वप्नवत् हो गईं। तो देखो, जो अपन को एडवांस ज्ञान लेने वाले बच्चे मानते हैं, ईश्वरीय ज्ञान का ऊँचे-से-ऊँचा स्तरधारी मानते हैं, वो बच्चे भी अज्ञान-अंधकार में डूबते जा रहे हैं या बाहर आ रहे हैं? सच्ची-2 बात बताओ। (किसी ने कहा- डूबते जा रहे हैं) अज्ञान-अंधकार में डूबते जा रहे हैं। क्यों? क्योंकि जैसे द्वैतवादी द्वापरयुग से ढेर-के-ढेर धर्मपिताएँ निकलते हैं और उनमें भारतवासी कन्वर्ट होते रहते हैं, ऐसे यहाँ भी ढेर-की-ढेर विष्णु पार्टियाँ निकल रही हैं, उन विष्णु पार्टियों के चक्कर में आते हैं। उनकी संख्या बढ़ रही है।

तो बताया कि ये माया रूपी रावण तुम बच्चों को भटकाय रहा है। कौन-सा माया रूपी रावण? कामी इस्लामी, क्रोधी क्रिश्चियन्स, लोभी मुस्लिम, मोही महर्षि दयानन्द के फॉलोअर्स, अहंकारी रशियन्स। उनके बीज

यहाँ हैं या नहीं हैं? (किसी ने कहा- हैं) जिन बीजों के ऊपर, उन विधर्मियों-विदेशियों के ऊपर, आत्मा में बड़ा मोटा-2 देहभान का छिलका चढ़ा हुआ है। इतना मोटा छिलका है कि धर्मराज के डंडे खाने के सिवाय वो छिलका उतरने वाला है ही नहीं। इन विदेशियों और विधर्मियों ने तुमको भटकाया है। जिनकी आत्मा के ऊपर; क्योंकि शरीर वृक्ष है, आत्मा बीज है; उन विदेशी-विधर्मी बीजों के ऊपर देहभान का जो मोटा-2 छिलका चढ़ा हुआ है, वो खुद भी भटकते हैं और अपने संग के रंग में आने वालों को भी भटकाय रहे हैं; परन्तु यहाँ बाप के सन्मुख रहने वालों को भटकने की बात नहीं है। यहाँ तो एक सेकेण्ड की बात है, जिस सेकेण्ड में क्या होगा? तुम पक्के-2 ज्योतिबिन्दु रूप आत्मा बन जावेंगे। कैसी आत्मा? नो संकल्प एट ऑल; निस्संकल्प आत्मा। मैं ज्योतिबिंदु, मेरा बाप ज्योतिबिन्दु और दूसरा दुनिया का कोई भी संकल्प टिकने न पाए। ऐसा सेकेण्ड जब आएगा, अभी तो प्रैक्टिस कर रहे हैं; लेकिन प्रैक्टिस करते-2 जब ऐसा सेकेण्ड आ जाएगा कि हम आत्मिक स्थिति की निराकारी स्टेज में टिक जावेंगे, तो क्या होगा? सदा/सर्वदा के लिए बाप मिल जावेगा, जो बाप हमारा वर्सा भी है, बाप हमारा घर भी है।

हम आत्माओं का घर कहाँ है? अरे, बच्चा पैदा होता है, कहाँ से निकलता है? कहते हैं अम्मा से पैदा होता है। अरे, अम्मा के अंदर पहले था क्या? (किसी ने कहा- नहीं था) तो कहाँ से आया? बाप से आया। तो जो मनुष्य-सृष्टि का बाप है, उस बाप में 500-700 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ बीज-रूप में समा जाती हैं, जिसकी यादगार बाप ने हमें मनुष्य-सृष्टि-वृक्ष रूपी झाड़ दिखाया है, जिस झाड़ में ऊपर की ओर जा करके फल पकता है, फिर उसमें से बीज झाड़ से डिटैच हो जाता है। उस मनुष्य-सृष्टि रूपी (वृक्ष का) बाप उस झाड़ के ऊपर बैठा हुआ दिखाया गया है, जो आत्मा रूपी बीजों को महामृत्यु के समय विनाश की विभीषिका में से, कामाग्नि से, क्रोधाग्नि से, देहभान से बाहर निकाल करके अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। झाड़ का चित्र ध्यान से देखा! ऊपर कौन बैठा हुआ है? शंकर बैठा हुआ दिखाया गया है। नंगा क्यों बैठा है? देह रूपी वस्त्र उतार दिया है। देह रूपी वस्त्र और उसकी इन्द्रियों की याद नहीं है, निराकारी स्टेज है और इतनी सशक्त निराकारी स्टेज है कि संसार की सभी आत्माओं को महामृत्यु के समय देहभान छुड़ा करके अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। तो आकर्षण करने वाले को नाम दे दिया है- 'कृष्ण भगवान'। कृष्ण का अर्थ क्या है? आकर्षण करने वाला। वो ही इस साकार सृष्टि में साकार भगवान बन करके संसार में प्रत्यक्ष होता है, जिसमें निराकार की यादगार आत्मा की निराकारी-निर्विकारी-निरहंकारी स्टेज समाई हुई है, बाप समान स्टेज समाई हुई है। कौन-सा बाप? आत्माओं का बाप, ज्योतिबिन्दु बाप, जो सदा/सर्वदा निराकारी है। वो निराकारी बाप जब इस सृष्टि पर आता है, तो बच्चों को नम्बरवार आप समान निराकारी बनाकर जाता है। तो (बच्चों में) 100 परसेण्ट एक (बड़ा बच्चा) होगा या अनेक होंगे? एक 100 परसेण्ट और बाकी सब परसेण्टेज में निराकारी बनते हैं; कुछ-न-कुछ देह-अभिमान रह जाता है। जो भी देहभान रह जाता है, उस देहभान का; विनाशकारी कौन गाया हुआ है? शंकर विनाशकारी गाया हुआ है; 500-700 करोड़ मनुष्यों का जो परसेण्टेज में देहभान रह जाता है, उस देहभान को भी भस्म कर देता है। जो गाते हैं शास्त्रों में कि शंकर ने क्या किया? कामदेव को भस्म किया। 'काम' माने कामना/इच्छा। बाप तो बताते हैं- इच्छा मात्रम् अविद्या, इस दुनियाँ की कोई इच्छा नहीं करनी है। बस, 'मैं ज्योतिबिन्दु आत्मा' और 'मेरा बाप ज्योतिबिन्दु आत्मा' और दुनिया की कोई भी इच्छा रह गई तो इच्छा मात्रम् अविद्या तो नहीं हुए ना! तो जो पुरुषार्थ करके अधूरे रह जाते हैं; क्यों अधूरे रह जाते हैं? कोई-न-कोई देह-अभिमानी (अंबा) का संग का रंग छोड़ता ही नहीं, अंतकाल तक नहीं छोड़ता। तो अंत मते सो गते हो जाती है। तो ऐसी देहभान में रहने वाली सभी मनुष्य-आत्माओं

के देहभान को भस्म कर देता है, योगाग्नि से भस्म करता है, जिसको शास्त्रों में दिखाया है- (अपने) कामदेव को भस्म कर दिया। वो समझते हैं- कोई एक कामदेव देवता होगा उसको भस्म कर दिया। नहीं, जो भी मनुष्यमात्र में कामनाएँ हैं, उन सभी की (और अपनी भी) कामनाओं को भस्म करने वाला है। तो गाया हुआ है- कामदेव को भस्म कर दिया।

तो बताया- यहाँ बाप के सन्मुख भटकने की बात नहीं है। यहाँ तो उस सेकेण्ड की बात है, जिस सेकेण्ड में तुम अपने निराकारी बाप के सन्मुख ऐसी स्टेज में ठहर जावेंगे कि देहभान का नाम-निशान भी नहीं रहेगा। वो सेकेण्ड गाया हुआ है कि राजा जन+क को एक सेकेण्ड में जीवन्मुक्ति मिली। जीवन्मुक्ति 100 परसेण्ट (कलातीत विष्णुलोकीय) राजधानी में मिलेगी, सात्विक राजधानी में मिलेगी या कमज़ोर राजधानी में मिलेगी? सात्विक राजधानी में मिलेगी। वो सात्विक राजधानी 100 परसेण्ट, जब बाप प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेते हैं तो एक सेकेण्ड में धक से राजधानी स्थापन कर देते हैं और वो सेकेण्ड अब दूर नहीं है; क्योंकि बाप ने हमें बताय दिया है ''तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।'' (मु.ता. 6.10.74 पृ.2 अंत) तो जो भी 40 वर्ष के बाद, अगले सेकेण्ड में कोई-न-कोई तो सतोप्रधान बनेंगे। तो एक सेकेण्ड में सतोप्रधान दुनिया में रहने का अनुभव करेंगे या तमोप्रधान राजधानी में रहने का अनुभव करेंगे? सत्वप्रधान राजधानी में रहने का अनुभव करेंगे। थोड़े होंगे या ज़्यादा होंगे? (किसी ने कहा- थोड़े होंगे) नई दुनिया में इतने ढेर-के-ढेर (सारी कुरियों के) ब्राह्मण जावेंगे क्या? नहीं! तो छटनी होगी कि नहीं होगी? छटनी होगी।

किनकी छटनी होगी? जिन्होंने रोज़ या कभी-2 कहने मात्र बाप का ज्ञान तो सुना है, क्या ज्ञान? ''हंस-बगुले इकट्ठे रह न सकें।'' (मु.ता.19.11.72 पृ.1 आदि) ये ज्ञान बीसियों बार सुना है; लेकिन देहभान के कारण एक कान से सुना और दूसरे कान से निकाल दिया। ऐसा हो रहा है या नहीं हो रहा है? (किसी ने कहा- हो रहा है) होता रहा है या नहीं होता रहा है? (किसी ने कहा- होता रहा है) लम्बे समय से हो रहा है या थोड़े समय से हो रहा है? लम्बे समय से ऐसा हो रहा है। तो आखरीन हंस-बगुले इकट्ठे रह न सकें- वो टाइम आएगा या नहीं आएगा? (किसी ने कहा- आएगा) तो वो टाइम आ गया। जबरदस्ती करेंगे- देखें! हमें कौन रोकता है! अरे, कौन रोकेगा? देखो, बाप भी कहते- मैं भी ड्रामा के बंधन में बाँधा हुआ हूँ। "मैं भी ड्रामा में बाँधा हुआ हूँ।" (मु.ता. 11.2.70 पृ.4 आदि) मुझे भी इस ड्रामा में, इस सृष्टि पर आना पड़ता है, तमोप्रधान दुनिया में आना पड़ता है, तमोप्रधान शरीर में आना पड़ता है और जिस तमोप्रधान शरीर में आता हूँ, मुकर्रर रूप से आता हूँ, वो मनुष्य-सृष्टि का बाप भी कहता है- मैं भी ड्रामा के बंधन में बाँधा हुआ हूँ, मेरी भी मनमानी नहीं चलेगी। तो ये पक्का समझो, देह-अभिमान के कारण अगर कोई ज़बर्दस्ती दिखाएँगे- देखें! हमको कौन रोकता है! तो ड्रामा तो कल्याणकारी है, ड्रामा के बंधन से कोई छूट सकता है! ड्रामा में कुछ-न-कुछ ऐसा हो जावेगा कि न चाहते हुए भी क्या होगा? जो बाप चाहते हैं वो ही हो जाएगा। बाप क्या चाहते हैं? बाप नई दुनिया की राजधानी स्थापन करना चाहते हैं या नहीं स्थापन करना चाहते हैं? (किसी ने कहा- स्थापन करना चाहते हैं)

बाप इस पुरानी दुनिया में किसलिए आया हुआ है? अनेक धर्मों की, विदेशियों की, विधर्मियों की जो अनेक प्रकार की दुनिया में राजधानियाँ हैं, वो सब नाश हो जाएँ और एक सतोप्रधान धर्म और एक सत्वप्रधान राजधानी की स्थापना करने आया हुआ है। तो टाइम भी बता दिया- 40 वर्ष। 40 वर्ष में कोई-न-कोई आत्माएँ तो दुनिया के संग के रंग से, दुनिया वालों के अन्नदोष से बच करके सम्पन्न बनेंगी। वो सम्पन्न हुई आत्माएँ पहले-2 नई दुनिया का सुख लेंगी और इस ड्रामा रूपी रंगमंच पर पूरे 5000 वर्ष पार्ट बजाएँगी। तो ऑलराउण्ड पार्टधारी

जो होंगे, वो ज़्यादा बुज़ुर्ग आत्माएँ, अनुभवी आत्माएँ, बाप के बडल्ले बच्चे (1+9 धर्मपिताएं) गाए जाएँगे या छोटे बच्चे गाए जाएँगे? बडल्ले बच्चे हैं। बड़े बच्चों को बाप का पहला-2 वर्सा मिलता है, छोटे बच्चों को बाद में मिलता है। दुनिया में जितनी भी राजाइयाँ हुईं, भारतवर्ष में खास, राजाओं ने अपने बड़े बच्चे को राज्य दिया। बड़ा बच्चा न रहा तो उससे जो छोटा होगा उसको राज्य-तिलक मिलता है।

तो देखो, अभी आत्मा रूपी जो पात्र हैं, पार्टधारी कहो, वो डिक्लेयर हो रहे हैं- कौन-सा पात्र कितनी ज्ञान की रोशनी, कितनी योग की पावर अपनी आत्मा रूपी पात्र में धारण कर सकता है, वो अभी माला के रूप में प्रत्यक्ष होने वाला है और वो प्रत्यक्षता शुरू भी हो चुकी है। कब से? (किसी ने कहा- 2004 से) 1976 से मनुष्य-सृष्टि के बाप की प्रत्यक्षता नहीं हुई? हीरो पार्टधारी की प्रत्यक्षता हुई या नहीं हुई? हुई। जो मनुष्य-सृष्टि का हीरो पार्टधारी है, वो प्रत्यक्ष हुआ, तो उसके बाद बाकी लोगों के लिए टू-लेट का बोर्ड लग गया। कोई भी परीक्षाएँ होती हैं, तो जो पूरी यूनिवर्सिटी में पहले नम्बर में पास होता है, उसका नाम अख़बारों में पहले डिक्लेयर किया जाता है, फिर नम्बरवार जो पास विद् ऑनर होते हैं, फर्स्ट क्लास होते हैं, सेकिण्ड क्लास होते हैं, उनका भी अख़बारों में नाम आ जाता है। नम्बरवार आता रहता है या नहीं? (किसी ने कहा- आता रहता है) तो जो एक है, जो लक्ष्य दिया था; क्या लक्ष्य था? नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी। वो एक युगल पार्टधारी (आदि ल.ना.) तो प्रत्यक्ष हुआ, बाकी के लिए टू-लेट का बोर्ड लग गया। ऐसे ही अब फिर 40 साल के बाद, अभी क्या होने वाला है? अभी 8 नम्बर डिक्लेयर होंगे, अष्टदेव प्रत्यक्ष होंगे, जिनकी मूर्तियाँ दक्षिण भारत के मंदिरों में बनाई जाती हैं; नॉर्थ इण्डिया में नहीं बनाई जातीं। क्यों? क्योंकि दक्षिण भारत है- भारत का विदेश। विदेशी तीक्ष्ण बुद्धि होते हैं या भारतवासी तीक्ष्ण बुद्धि होते हैं? (किसी ने कहा- विदेशी) तो विदेशी बने बाप को कौन पहले पहचानेंगे? (किसी ने कहा- विदेशी) वो दूसरे-2 जितने भी नं. वार धर्म हैं, उन धर्मों के जो पूर्वज हैं, उन धर्मों में सबसे पहले इस दुनिया में जन्म लेने वाले, आठों धर्मों के पूर्वज, अष्टदेव जिन्हें कहा जाता है, वो इस दुनिया में पहले प्रत्यक्ष होते हैं, 4 मुख्य विदेशी उनको पहले पहचानते हैं। तो वहीं उनकी यादगार बनती है, मूर्ति बनती हैं, मंदिर बनाए जाते हैं; नॉर्थ इण्डिया में उनके मंदिर नहीं बनाए जाते। तो आठ प्रत्यक्ष होंगे, जो धर्मराज की सज़ाएँ भी नहीं खाएँगे, दुनिया की, चुनी हुईं ऐसी 100 परसेण्ट पक्की बीजरूप आत्माएँ प्रत्यक्ष होंगी । उसके बाद, 100+8 की लिस्ट में आने वालों की, प्रत्यक्षता होगी। आठ प्रत्यक्ष होंगे, बाकी के लिए टू-लेट का बोर्ड लग जावेगा, फिर जो भी आवेंगे, माला के मणके प्रत्यक्ष होंगे, वो आठ की लिस्ट में नहीं आय सकेंगे।

इसलिए बोला- यहाँ बाप कोई शास्त्र नहीं सुनाते हैं। जो सुनाने वाला भगवान है, वो शास्त्र पढ़ करके सुनाता है? नहीं सुनाता! अरे, कागज़ के पत्ते को शास्त्र नहीं कहते? (किसी ने कहा- कहते हैं) ये पत्ते नहीं हैं क्या? ये शास्त्र हैं या नहीं हैं? कागज के पत्ते ही तो शास्त्र कहे जाते हैं। कौन लिखते हैं, कौन छपाते हैं? भगवान छपाते हैं कि मनुष्य छपाते हैं? मनुष्य लिखते हैं, मनुष्य छपाते हैं। तो ये शास्त्र पढ़ करके कोई भगवान नहीं सुनाते हैं। भगवान एक आत्मा को कहा जाता है या ब्रह्मा, विष्णु, शंकर/अष्टदेव को कहा जाता है? (किसी ने कहा- एक आत्मा को) एक बाप सुनाते हैं। सुनाने वाला कौन है? (किसी ने कहा- एक बाप) एक सुप्रीम सोल, सभी मनुष्य-आत्माओं का बाप सुनाते हैं। कौन है? शिव बाप। शिव बाप अजन्मा है, वो जन्म के चक्र से, मृत्यु के चक्र से न्यारा है; इसलिए उसकी आत्मा में तीनों कालों का ज्ञान भरा हुआ है। जो आत्माएँ जन्म-मृत्यु के चक्र में आती हैं, वो पूर्वजन्मों की बातों को भूल जाती हैं। तो देखो, उस एक भगवान बाप को, जिसको कहा जाता है- गॉड इज़ वन। गॉड इज़ ट्रुथ; ट्रुथ इज़ गॉड। वो सुप्रीम सोल पढ़ करके सुनाते हैं या ब्रह्मा के तन में प्रवेश करके ओरली बोलते हैं?

बोलते हैं। जैसे और धर्मपिताएँ आए, इब्राहीम/मोहम्मद आए, क्या उन्होंने कुरान लिखी? नहीं! क्राइस्ट आया, क्या उन्होंने बाइबल लिखी? नहीं लिखी। बुद्ध आया, उन्होंने अपने शास्त्र को लिखा? फॉलोअर्स ने लिखा। उन्होंने तो ओरली सुनाया। तो यह सत्य सनातन धर्म का जो बाप है, सत् बाप, जिसे गॉड इज़ ट्रुथ कहा जाता है, वो सत् एक ही है, बाकी तो सब झूठे हैं। बाकी सब इस दुनिया में, झूठखण्ड में कुछ-न-कुछ नम्बरवार झूठे ही हो जाते हैं।

जो सत् है, वो सदाकाल रहता है या आज सत् है, कल भाग जाता है? सत् सदाकाल रहता है। तो उस दुनिया में कोई आत्मा है, जो पूरे 84 के चक्र का पार्ट बजाती है? हैसी भी सत्, होसी भी सत् और भूतकाल में भी सत्य थी। वो हीरो पार्टधारी इस दुनिया में सदैव रहता है। "इस सृष्टि में हट्टी (सदा) कायम कोई चीज़ है नहीं। सदा कायम तो एक शिवबाबा ही है। बाकी तो सबको नीचे आना ही है।" (मु॰ता॰ 2.1.75 पृ॰3 अंत) तो जो शिवबाबा इस सृष्टि पर सदा कायम है, जिसकी यादगार काशी-कैलाशी वासी शंकर का रूप गाया हुआ है। शंकर (का) जन्म, शंकर के माँ-बाप, शंकर की मृत्यु शास्त्रों में दिखाई है? नहीं! न उसका जन्म, न उसकी मृत्यु होती है। वो इस सृष्टि पर सदाकाल है और सदाकाल रहता है; महामृत्यु में भी सबके शरीर छूट जावेंगे, सभी मनुष्य-आत्माएँ कुछ-न-कुछ परमधाम में पड़ी रहेंगी और वो एक ही आत्मा है मनुष्य-सृष्टि का बाप, जो इस सृष्टि पर महामृत्यु के समय भी कायम रहेगा। वो कालों का काल है, महाकाल है, उसको कोई काल खा नहीं सकता, महामृत्यु के समय भी नहीं खा सकता। तो सत् है या असत् है? (किसी ने कहा- सत्य है) गीता में भी कहा है- "नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।" (गीता 2/16)- जो सत् है उसका इस दुनिया में कभी अभाव नहीं होता माना विनाश काल में भी अभाव नहीं होता, लोप नहीं होता। वो जो सदा सत् है, इस सृष्टि में सदा सत् है, वो अपनी सम्पूर्णता में कोई शास्त्र-वास्त्र नहीं पढ़ते हैं। उस शंकर का शरीर तो है, मुख तो है, स्थूल आँखें तो हैं; लेकिन वो आत्मा की चित्रों में, सम्पूर्णता की यादगार हैं। चित्र, चरित्र की यादगार हैं ना! तो कौन-सा चरित्र दिखाते हैं? याद में बैठा हुआ वो चरित्रवान चित्र दिखाया जाता है, और कर्मों का चित्र कम दिखाते हैं। सबसे जास्ती कौन-सा चित्र दिखाते हैं? याद में बैठा हुआ। याद मन-बुद्धि से किया जाता है, उसके लिए इन्द्रियों की दरकार है ही नहीं। कर्मेन्द्रियों से कर्म किया जाता है। तो बाबा कहते- शंकर क्या करता है? कुछ भी नहीं। "शंकर का पार्ट कुछ भी है नहीं।...शंकर क्या करते हैं?" (मु.ता.29.5.85 पृ.2 आदि) वो तो इन्द्रियों से कुछ काम ही नहीं करता। वो क्या करता है? याद में बैठा हुआ है। तो बोला- वो कोई मुख से शास्त्र नहीं पढ़ता, उसके अंदर जो सदाशिव है, जो तीसरे नेत्र के रूप में दिखाया जाता है, वो शिव आत्माओं का बाप, जिसकी बिन्दी का ही नाम 'शिव' है, वो भी शास्त्र-वास्त्र नहीं पढ़ता। वो शास्त्र पढ़ करके सुनाता है? नहीं। कौन सुनाता है? (किसी ने कहा- ब्रह्मा बाबा) हाँ, जो अधूरा ज्ञान-चंद्रमा है, अधूरी ज्ञानी आत्मा है; अधूरी क्यों? (किसी ने कहा- पूरा ज्ञान नहीं समझते) पूरा ज्ञान माना जो बाप इस सृष्टि पर नई दुनिया बनाने का पार्ट बजाय रहा है, उस बाप को नहीं जानती, नहीं पहचानती। जानते हुए भी, पहचानते हुए भी, सुनते हुए भी, फिर भी कहाँ भाग जाती है? (किसी ने कहा- गुलज़ार दादी में) बच्चों में मोह लगा हुआ है, वो मोह पहचानने नहीं देता। ये देहभान का मोह ऐसा ही है। देहधारियों से जो लगाव है, वो बहुत खतरनाक है; इसलिए जो ईश्वर का ज्ञान है- गीता-ज्ञान, वो सिखाता ही है- 'नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा'। देह, देह के सम्बंधों से, देह के पदार्थों से, देह की दुनिया से मोह नष्ट हो जाए, कोई अटैचमेण्ट नहीं। तो उस शरीर में सूक्ष्म शरीरधारी कौन है? ज्ञानचन्द्रमाँ ब्रह्मा की आत्मा सूक्ष्म शरीरधारी है। सूक्ष्म में ज़्यादा ताकत होती है या स्थूल शरीर में ज़्यादा ताकत होती है? (किसी ने कहा- सूक्ष्म शरीर में) सूक्ष्म शरीर और ज़्यादा देहभान का पुतला बन जाता है। किसी में कोई भूत प्रवेश करता है, जिस देहधारी में भूत आता है वो

लुंजुम-पुंजुम बहुत कमज़ोर है और उसमें भूत आता है, तो बहुत पावरफुल काम करके दिखाता है कि नहीं? (किसी ने कहा- दिखाता है) हाँ, वो पावर कहाँ से आती है? सूक्ष्म शरीरधारी आत्मा से आती है। तो ब्रह्मा की आत्मा भी सूक्ष्म शरीरधारी है और वो सूक्ष्म शरीरधारी आत्मा ही अधूरी है। मस्तक में अधूरा चंद्रमा है या सम्पूर्ण चंद्रमा है? अधूरा चंद्रमा है। वो अधूरी चंद्रमा रूपी दादा लेखराज की आत्मा, वो शास्त्र पढ़ती है। वो शास्त्र पढ़ती भी है और कागज़ के पत्ते पढ़कर सुनाती भी है; लेकिन भगवान कोई शास्त्र नहीं पढ़ता है, हाँ, उन शास्त्रों का सार सुनाता है, उन शास्त्रों में तथ्य क्या है, वो ब्रह्मा मुख से निकली जो वेदवाणी है, जिसे ब्राह्मण लोग 'मुरली' कहते हैं, उस मुरली में तथ्य क्या है, सत्य क्या है, सार क्या है- वो बात बताती है।

तो यहाँ कोई माथा टेकने की बात नहीं है, कुछ भी माथा टेकने की बात नहीं है। ये माथा टेक दिया। माथा टेक का मतलब क्या होता है? बुद्धि को अर्पण कर दिया। जो बुद्धि अर्पण कर दे, वो बात-2 में अपनी बुद्धि चलाएगा? नहीं चलाएगा। यह बात ऐसे नहीं, वो बात ऐसे नहीं; मुरली में यह बात ऐसे नहीं है, वो मुरली की बात ऐसे नहीं है; शास्त्रों में ऐसे नहीं है, वैसे नहीं है- इस तरह बुद्धि नहीं चलाएगा। तो भगवान बाप कहते हैं- यहाँ कोई माथा टेकने की बात नहीं है कि तुम अपनी बुद्धि को सरेण्डर कर दो, बुद्धि चलाना बंद कर दो। ऐसा बाप नहीं सिखाते हैं। माथा टेकना भक्तिमार्ग में सिखाते हैं या ज्ञानमार्ग में सिखाते हैं? (किसी ने कहा- भक्तिमार्ग में) भक्तिमार्ग में गुरु लोग बैठे हुए होते हैं, कहते हैं- हे! सभा में कोई प्रश्न नहीं करना। जो कुछ पूछना हो, बाद में पूछना और बाद में उड़ जाते हैं। अब वो गुरु चाहे दुनियावी देहधारी धर्मगुरु हों, चाहे ब्रह्माकुमार-कुमारियों की दुनिया में देहधारी धर्मगुरु हों और चाहे एडवांस ब्राह्मणों की दुनिया के देहधारी धर्मगुरु हों, वो प्रश्न-उत्तर करने का मौका किसी को नहीं देते- कहेंगे कि तुम अपनी अकल मत चलाओ, बाबा का डायरैक्शन है। क्या कहेंगे? बाबा का डायरैक्शन; और बाप क्या कहते हैं? बाप माथा टेकना नहीं सिखाते, माथा रूपी जो बुद्धि है, उसे अर्पण करना नहीं सिखाते। बुद्धि पूर्वजन्मों के कर्मों के हिसाब से इस जन्म में मिली है; हरेक को अपने-2 प्रकार की बुद्धि मिली है। वो बुद्धि अपने पास रख करके बुद्धि से परखो, पहचानो- क्या सत्य है, क्या असत्य है। मुँह बंद नहीं करते। बुद्धि को अर्पण करना, माथा टेक करना नहीं सिखाते। कहते हैं- अंदर में अगर कोई संशय आता है, तो क्या करो? पूछो। गीता में भी क्या कहा? गीता में भी अर्जुन से कृष्ण ने कहा- "परिप्रश्नेन सेवया।" (गीता 4/34) प्रश्न-उत्तर के रूप में आत्मा की सेवा करो, अंधश्रद्धालु बनने की दरकार नहीं है। पूछो, कोई बात समझ में नहीं आती है तो क्या करो? पूछो। तो बाप कोई माथा टेकना नहीं सिखाते हैं।

यहाँ तो बिलकुल सीधी समझानी देते हैं। तो जो सीधी-2 समझानी देते हैं- बाप की पहचान। तो तुम समझाते ही नहीं हो। सर्विस के नाम पर, ईश्वरीय सेवा के नाम पर जाना-आना तो करते हो, मुख से कुछ-न-कुछ सुनाते तो हो, बाप की पहचान की जो समझानी देनी है, वो समझानी नहीं देते। जिसने समझा होगा, जितने परसेण्टेज में बाप को समझा होगा- मैं जो हूँ, मैं जैसा हूँ, जिस रूप में पार्ट बजाय रहा हूँ, मेरा यादगार मंदिर में रखा हुआ है। पार्ट बजाय रहा हूँ कि नहीं? मेरे पार्ट की यादगार सार्वभौम सारी दुनिया में यादगार मंदिरों में रखा हुआ है कि मैं जो भी पार्ट बजाता हूँ, मैं जो हूँ, जैसा हूँ, उसको कोई विरले बच्चे हैं जो पहचानते हैं और कभी भी अपोजिशन नहीं करते हैं। तो वो बात तुम समझाते ही नहीं हो। क्या? जो प्रैक्टिकल में पार्ट बजाने वाला बाप है; अभी है या नहीं है? (किसी ने कहा- है) प्रैक्टिकल माने शरीर के साथ, शरीर की कर्मेन्द्रियों के साथ पार्ट बजाय रहा, उस बाप की पहचान तुम देते ही नहीं हो। दुनिया भर की तिक-2, तिक-2 करते रहते हो। बाबा को ये बहुत फीलिग आती है। बाप रे! 80 साल हो गए समझाते-2 और 80 साल होने के बावजूद भी जो बात समझने की है

और समझकर जो दूसरों को समझाने की है, वो बात बच्चे आज तक भी नहीं समझाते हैं। दुनिया भर की भाग-दौड़ करते हैं- ये प्रदर्शनी, ये मेला, ये कॉन्फ्रेन्स; इधर जाओ, उधर जाओ; यहाँ भागो, वहाँ भागो; ये वाचा चलाओ, वो वाचा चलाओ। अपना प्रभाव बैठा देते हैं, समझने वाली आत्माओं के ऊपर अपना सिक्का जमा देते हैं; लेकिन जिस बाप का परिचय देना चाहिए, जिस बाप के प्रभाव में लाना चाहिए, उस बाप का परिचय, वो समझानी नहीं देते हैं।

जब भी बाबा रहते हैं, बाबा आया है ना? आया है या चला गया? आया है। किसलिए आया है? अरे, बाबा का आने का कोई मक़सद है? नई दुनिया बनाने के लिए आया है। दुनिया में भी कोई व्यक्ति होता है, काम शुरू करता है, काम पूरा करता है तो उसको श्रेष्ठ माना जाता है, एक बार काम शुरू कर दिया तो उसको बीच में अधूरा छोड़ता नहीं और जो बीच में अधूरा काम छोड़ करके चले जाते हैं, उनको हिम्मतहीन माना जाता है, कायर माना जाता है या श्रेष्ठ माना जाता है? कायर मानते हैं। तो बाप तो आया है ना! जिस कार्य से आया है, वो काम पूरा करके जावेगा या बीच में चला जावेगा? पूरा करके जावेगा। बहुत वो बिचारा भटका हुआ बोलता है। कौन? 'वो' कहकर किसकी तरफ़ इशारा किया? आने वाले पार्ट की तरफ़ इशारा किया, जो बाप का पार्ट है। वो बिचारा इस संगमयुगी शूटिंग पीरियड में भी बहुत भटका हुआ है और 63 जन्मों में भी इस दुनिया में बहुत भटका हुआ है, इस झूठी दुनिया की बहुत टक्करें झेला हुआ है। जो सत्य होगा, वो सत्य, असत्य से टक्कर लेगा या नहीं लेगा? लेगा। भारतखण्ड सचखण्ड है, अविनाशी खण्ड है। तो यहाँ हिस्ट्री देख लो, विनाशी खण्डों से आए हुए इतने अत्याचारियों ने कितने आक्रमण किए, उनसे भारतवासियों ने टक्कर ली या नहीं ली? (किसी ने कहा- ली) जन्म-जन्मान्तर टक्कर लेते रहे या नहीं लेते रहे? (किसी ने कहा- लेते रहे) उन भारतवासियों में नम्बरवार होंगे या एक जैसे होंगे? (किसी ने कहा- नम्बरवार) कोई अव्वल नम्बर भी तो होगा! तो सबसे ज़्यादा टक्कर कौन लेगा? अव्वल नम्बर ही लेगा।

मैं जानता हूँ कि ये बच्चियाँ जाती हैं, समझाती हैं; परन्तु कोई को भी पूरा ज्ञान का तीर लगता ही नहीं है। क्यों नहीं लगता? जिस युक्ति से समझाना चाहिए, उस युक्ति से समझातीं नहीं तो ज्ञान का तीर लगता ही नहीं और ये ज्ञान का तीर लगाना तो बहुत सहज है, बिलकुल सहज। दो-चार दिनों से बाबा त्रिमूर्ति के चित्र के ऊपर बता रहे हैं कि त्रिमूर्ति के चित्र में बताना चाहिए- कौन-सी मूर्ति भगवान है। बताओ। (किसी ने कहा-शंकर) लो, कहते हैं- ब्रह्मा वाली आत्मा, जो सतयुग में कृष्ण का पार्ट बजाती है, वो भगवान नहीं। ब्रह्मा सो विष्णु भी बनता है, देवता है 16 कला सम्पूर्ण, वो भी भगवान नहीं; क्योंकि कलाओं में बँधा हुआ भगवान होता ही नहीं। सूर्य को कलाओं में बाँधा जाता है क्या? नहीं। बाकी बचा शंकर। तो बाप कहते हैं- शंकर भी याद में बैठा हुआ है ना! याद का पुरुषार्थ करता है या नहीं करता है? (किसी ने कहा- करता है) पुरुषार्थी है या सम्पन्न भगवान है? पुरुषार्थी है और शंकर को महादेव कहा जाता है। देवताओं में बड़ा देवता है या भगवान है? देवता है। तो उसको भगवान क्यों कह दिया? (किसी ने कहा- शिव समान निराकारी स्थिति) इसलिए बाबा कहते हैं- कोई मम्मा के मुरीद, कोई बाबा के मुरीद, शिवबाबा को कोई पूछता ही नहीं। ''अभी तुमको बनना है शिव बाबा का मुरीद। कोई भी देहधारियों का मुरीद नहीं बनना है।'' (मु.ता.18.3.69 पृ.3 अंत) तो बताओ, तीन मूर्तियों का जो चित्र है, उसमें भगवान बाप है या नहीं है? (किसी ने कहा- है) भगवान बाप का परिचय त्रिमूर्ति में नहीं देंगे? (किसी ने कहा- देंगे) तो बताओ कौन है? (किसी ने कहा- शिव बाप) अरे, मूर्ति की बात हो रही है। (किसी ने कहा- शंकर) फिर वही शंकर! अरे, शंकर देवताओं में बड़ा देवता महादेव है या भगवान है? महादेव है। वो याद में बैठा हुआ याद

का पुरुषार्थ करता है या नहीं करता है? (किसी ने कहा- करता है) तो पुरुषार्थ करने वाला है या पुरुषार्थ कराने वाला भगवान है? (किसी ने कहा- करने वाला है) वो तो पुरुषार्थ करने वाला है ना! 'नर' माने मनुष्य है ना! मनुष्य से देवता बनने वाला है ना! कि भगवान है? (किसी ने कहा- पुरुषार्थ पूरा हो जाता है तब नारायण बाप समान...) पुरुषार्थ पूरा हो जाता है तो शिव के मंदिर में शंकर की मूर्ति, देवताओं के बीच में चारों तरफ़ जो मुख्य स्थान होता है, वहाँ बैठी हुई दिखाई जाती है या बीच में बैठे हुए मुखिया बाप के रूप में दिखाया जाता है? (किसी ने कहा- बीच में) देवताओं के बीच में बैठा है ना! तो भगवान है? अरे, मनुष्य को देवता बनाने वाला बाप है? (किसी ने कुछ कहा-...) अरे, तो अब त्रिमूर्ति में बताओ ना! त्रिमूर्ति के चित्र में भगवान बाप कौन-सी मूर्ति है? (किसी ने कहा- साकार में निराकार) मूर्ति बताओ कौन-सी है? (किसी ने कहा- शिवबाबा) किस तरफ़ इशारा करेंगे? (किसी ने कहा- शंकर) फिर वहीं-के-वहीं आ गए! इसीलिए तो बाप कहते हैं- खुद नहीं पहचाना है तो दूसरों को क्या पहचान देंगे! क्या कहा? जिसने खुद पहचाना होगा उस मूर्ति को, वो ही दूसरों को पहचान देगा या नहीं पहचाना होगा तो पहचान देगा? (किसी ने कहा- पहचाना होगा तभी परिचय देगा) तो इतनी बड़ी ब्राह्मणों की सभा बैठी हुई है, बताओ कि त्रिमूर्ति के चित्र में भगवान की मूर्ति कौन-सी है? (किसी ने कहा- राम वाली आत्मा) कृष्ण वाली आत्मा ब्रह्मा का पार्ट बजाती और राम वाली आत्मा शंकर का पार्ट बजाती, वही राम वाली आत्मा! राम के भक्त, रहीम के बन्दे, हैं सब आँखों के अंधे। बोलते हैं- राम भगवान, बोलते हैं- कृष्ण भगवान। अरे, अंधे! राम-कृष्ण देवताएं हैं, कलाओं में बँधे हुए हैं या कलातीत भगवान हैं? (किसी ने कहा- कलाओं में बँधे हुए) तो कौन-सी मूर्ति है त्रिमूर्ति में? अरे, गाया जाता है- ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत, तो त्रिमूर्ति में सबसे ऊँची, सबसे ऊपर कौन-सी मूर्ति है? त्रिमूर्ति के चित्र में वो देखो रखी है त्रिमूर्ति की मूर्ति! (किसी ने कहा- शिव बाप) मूर्ति बताओ। शिवबाप-3 हिलाया हुआ है, शिव बिन्दी का नाम है या मूर्ति का नाम है? (किसी ने कहा- बिंदी का नाम) बिन्दी की मूर्ति बनाओगे? (किसी ने कहा- नहीं) तो बताओ, त्रिमूर्ति में भगवान बाप की मूर्ति कौन-सी है? (किसी ने कहा- सम्पूर्णता की स्टेज वाला नारायण) त्रिमूर्ति के चित्र में नारायण कहाँ रखा हुआ है! (किसी ने कहा-विष्णु की सम्पन्न स्टेज) विष्णु देवता है कि भगवान है? (किसी ने कहा- देवता है) 16 कला सम्पूर्ण है या कलाओं से परे है? (किसी ने कहा- 16 कला सम्पूर्ण है) तो भगवान कहाँ हुआ? ओ हो! उस भगवान की यादगार सारी दुनिया में बनी हुई है, विदेशों में भी है। (किसी ने कहा- शिवलिग) (किसी ने पूछा- त्रिमूर्ति में कहाँ है शिवलिग?) शिवलिग ऊपर नहीं रखा है, ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत? आँखें फाड़-2 कर देखो ना! वो बिन्दी रूप में रखा है? आँखें छोटी तो नहीं हो गईं तो बिन्दी दिखाई दे रही है? लिग रखा है। लिग को मूर्ति कहेंगे या बिन्दु को मूर्ति कहेंगे? लिग को मूर्ति कहेंगे। कैसी मूर्ति? जो गीता में बताया गया-''अव्यक्तमूर्तिना।'' (गीता 9/4)

व्यक्त माने जो आँखों से देखा जाए; अव्यक्त माने जो आँखों से न देखा जाए। वो ऐसी अव्यक्त मूर्ति है जिस मूर्ति में नाक, आँख, कान, हाथ, पाँव, इन्द्रियाँ नहीं दिखाई देती हैं, एक लिग-रूप ही दिखाई देता है। मेरे लिग की ही पूजा होती है। देवताओं की सब इन्द्रियों की पूजा होती है। नेत्र कमल, पाद कमल, हस्त कमल, मुख कमल- पूजा होती है ना! वो देवताओं की सभी इन्द्रियों की पूजा होती है सिवाय कामेन्द्रिय के। कामेन्द्रिय/लिग इन्द्रिय की पूजा मेरी ही होती है। अब बताओ! आत्माओं का बाप जो शिव ज्योतिबिन्दु है, वो निराकार है या इन्द्रियों वाला है? (किसी ने कहा- निराकार) उसको कामेन्द्रिय है? नहीं। वो जब इन्द्रियधारी में प्रवेश करता है अर्थात् मुकर्रर रथ में प्रवेश करता है तो उस मुकर्रर रथ को, जो रथ भगवान बाप कण्ट्रोल करते हैं, उसकी इन्द्रियों रूपी घोड़ों को कण्ट्रोल करते हैं। उन इन्द्रियों के बीच में कामेन्द्रिय मुख्य इन्द्रिय है, जो चंचल मन वाले मनुष्यों के

कण्ट्रोल में नहीं आती। कण्ट्रोल में आती है? खास करके तब जब प्रवृत्ति में होते हैं। 'प्र' माने प्रकृष्ट रूप से, 'वृत्ति' माने चारों तरफ़ से घेर करके। स्त्री-पुरुष जब मिलन-मेला मनाते हैं तो वृत्त हो जाता है ना, एक-दूसरे को घेर लेते हैं ना! वृत्त माने घेरना। तो वो यादगार दिखाई गई है- प्रवृत्तिमार्ग का सबसे श्रेष्ठ नमूना। वो यादगार जिसकी दुनिया में बड़े-ते-बड़ी पूजा होती है। तो बड़े-ते-बड़ा काम किया होगा तब ही पूजा होगी या छोटा काम किया होगा? जो काम मनुष्यमात्र ने नहीं किया, वो काम मनुष्य-सृष्टि का जो बाप कहा जाता है- जगत्पिता; ''जगतं पितरम् वन्दे...।'' कौन? उसका नाम क्या? (किसी ने कहा- शंकर) हाँ, उसका ऐसा सम्पन्न साकार सो निराकार रूप, जिसकी मन-बुद्धि रूपी आत्मा को इन्द्रियों का भान रहता ही नहीं; इसलिए उस लिंग में इन्द्रियाँ दिखाई ही नहीं दी हैं, अव्यक्त हैं। इन्द्रियाँ व्यक्त हैं या अव्यक्त हैं? अव्यक्त हैं। वो इन्द्रियाँ इन आँखों से दिखाई नहीं देतीं। बाकी ऐसा नहीं है कि वो शिव का बड़ा रूप, साकार रूप, जिसके लिए बाप कहते हैं कि तुम्हें छोटा रूप (शिव) बिन्दु याद नहीं आता है तो अच्छा तुम बड़ा रूप ही याद करो, वो लिंग-रूप ही याद करो। ''भल बिंदी बुद्धि में याद ही नहीं आती। अच्छा, शिव को तो याद करो तो पाप कटे। बड़े रूप पर हिरे हुए हो, बड़ा ही सही। मतलब शिवबाबा को याद करो। भक्तिमार्ग में भी शिव को तो याद करते हो ना। बड़े को भी याद किया तो सभी पाप कट जावेंगे।'' (मु.ता. 17.1.69 पृ.1 मध्यांत रात्रि क्लास) (शिव निराकार को तो लिंग होता नहीं।) वो लिंग-रूप कैसा? उसको साकार इन्द्रियों की स्मृति है ही नहीं, एक निराकारी स्टेज है, एक बाप की स्मृति में, बाप समान ज्योतिबिन्दु बना हुआ है, सम्पूर्ण इच्छा मात्रम् अविद्या- संसार की कोई भी कामना नहीं, मंसा में कोई भी संकल्प नहीं, निस्संकल्प ऐसी बीज-रूप स्टेज। उसकी यादगार है 'शिवलिंग'। शिवलिंग क्यों कहा, शंकरलिंग क्यों नहीं कहा? अरे, कोई कारण होगा ना! क्या कारण है जो शिवलिंग कहते हैं, शंकरलिंग नहीं कहते हैं। नाम किसका पड़ता है? अरे, काम का नाम पड़ता है कि बिना काम किए नाम पड़ जाता है? (किसी ने कहा- काम के आधार पर) तो ऐसा लिंगधारी, जिसने उस लिंग से/कामेन्द्रिय से ऐसा काम करके दिखाया; कैसा काम? पवित्रता का काम, एवरप्योरिटी का काम, प्रैक्टिकल काम करके दिखाया। ऐसे नहीं कि सिर्फ कहने मात्र एवरप्योर है। कौन? बिन्दी। अरे, बिन्दी-5 कीड़े-मकोड़े भी बिन्दी, वो एवरप्योर हो गए? (किसी ने कहा- नहीं!) तो कौन-सी स्पेशल बिन्दी? वो स्पेशल बिन्दु रूप आत्मा, जिसने पुरुषार्थ करके ऐसी बाप समान निराकारी स्टेज धारण कर ली कि उसे दूसरी इन्द्रियाँ तो क्या, जो इन्द्रिय जीतना सबसे प्रबल है, जिसके लिए गाया हुआ है-'काम जीते जगतजीत', 'इन्द्रिय जीते जगतजीत'-उस इन्द्रिय को भी विस्मरण कर दिया, उसकी स्मृति से ही परे हो गया, शिव बाप के रूप में टिक गया, लीन हो गया। तो उस पुरुषार्थी आत्मा के लिंग की पूजा होती है।

इसलिए शिव बाप ब्रह्मा द्वारा कहते हैं- मैं तो अकर्ता हूँ। मैं कर्मेन्द्रियों से कर्म करता हूँ या अकर्ता हूँ? मैं तो अकर्ता हूँ। जो करता है सो भरता है। अच्छा कर्म करता है, सुखदायी कर्म करता है तो जन्म-जन्मान्तर सुख पाता है और दुर्योधन-दुःशासनों की तरह इन्द्रियों से दुष्ट युद्ध करता है, दुष्ट शासन करता है- दुःशासन, तो जन्म-जन्मान्तर दुख भोगेगा या सुख भोगेगा? दुख भोगता है। कौरव सम्प्रदाय है, पाण्डव सम्प्रदाय नहीं है, पण्डा बाप का बच्चा नहीं है। तो पाण्डवों में वो अव्वल नम्बर पाण्डव, जो माया के युद्ध में सदा इन्द्रियों से स्थिर रहता है। अभ्यास करते-2, दुनिया से वैराग करते-2 क्या स्टेज बन जाती है? माया के युद्ध में, मायावी कर्मेन्द्रियों के युद्ध में क्या करता है? सदा विजयी हो जाता है, हारने का नाम ही नहीं; इसलिए एक ही सम्पन्न रूप है दुनिया में, देवताओं के बीच में- नर से नारायण, जिसकी कभी भी युद्ध में हार नहीं हुई। शूटिंग पीरियड में हार नहीं हुई तो 5000 वर्ष के ड्रामा में उसकी हार होगी? (किसी ने कहा- नहीं) इसीलिए भारत का नाम बहुत गाया हुआ है। भारत में जैसे

वीर योद्धाएँ हुए हैं, ऐसी वीरता का काम करने वाले योद्धाएँ दुनिया में कहीं भी नहीं हुए। तो यहाँ बाप कौन-सी वीरता सिखाते हैं? जो माया का युद्ध है- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार- इन पाँच विकारों का युद्ध, उनमें भी जो बड़ा प्रबल है; कौन? कामेन्द्रिय का युद्ध। उस कामेन्द्रिय के युद्ध में (शिव) बाप की याद में रह करके ही विजयी बन सकते हैं। बाप की याद में या बाबा की याद में? (किसी ने कहा- बाप की याद में) बाप की याद में! (किसी ने कहा- नहीं, बाबा की याद में) बाप कहेंगे, वो तो आत्माओं का बाप दुनिया का सबसे बड़ा संन्यासी है।

तो पक्का प्रवृत्तिमार्ग वाला वो बेहद का बाप कौन है? प्रजापिता, मनुष्य-सृष्टि का बाप। जो सृष्टि के आदि से ले करके अंत तक प्रवृत्ति का पक्का है, निवृत्ति में कभी रहता ही नहीं। वो निवृत्तिमार्ग वाले गुरु प्रवृत्ति को छोड़ करके भाग जाते हैं। कायर हैं या विकारों के युद्ध को जीतने वाले हैं? कायर हैं। अर्जुन को भगवान कहते हैं- "तू कायर मत बन।"अर्जुन कहता है- "इस अघोरियों के घोर कर्म में (गीता 3-1) मेरे को क्यों जोड़ते हो?" भगवान कहते हैं- "मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।"(गीता 3/23)- इस दुनिया में जो भी मनुष्यमात्र हैं, मैंने जो रास्ता अपनाया है, उसी रास्ते का अनुगमन करते हैं। मैं शिव ज्योतिबिन्दु जब इस दुनिया में आता हूँ, तो प्रवृत्ति में रहता हूँ। वो धर्मपिताएँ तो आज एक के साथ प्रवृत्ति जोड़ते हैं, कल छोड़ देते हैं, दूसरी प्रवृत्ति अपनाते हैं। उनके फॉलोअर्स भी आज एक शादी की, डायवोर्स दिया, कल दूसरी, तीसरी, चौथी। अंग्रेज़ लोग तो पता नहीं, बीसियों शादी करते रहते हैं। तो प्रवृत्ति को निभाने वाले हैं या प्रवृत्ति को तोड़ने वाले हैं? (किसी ने कहा- तोड़ने वाले) वो सब निवृत्तिमार्ग वाले धर्मपिताएँ हैं, उनके फॉलोअर्स भी निवृत्तिमार्ग वाले हैं। एक सुप्रीम सोल बाप ही है, जो साकार मनुष्य-सृष्टि में आकर, साकार मनुष्य के रथ में प्रवेश करके बेहद की पक्की प्रवृत्ति निभाता है। दुनिया वाले तो एक के साथ, दो के साथ, चार के साथ, आठ के साथ, बीस के साथ, सौ के साथ निभाएँगे? निभाते हैं या तोड़ते जाते हैं? (किसी ने कहा- तोड़ते जाते हैं) और मैं? मेरी प्रवृत्ति तो शास्त्रों में गाई हुई है। कितनों के साथ प्रवृत्ति है? (किसी ने कहा- 16,108 के साथ) 16 हज़ार इन्द्रियों का गुप्त सम्बंध जोड़ने वालों के साथ मेरी प्रवृत्ति है और कोई को मैं छोड़ता नहीं हूँ। छोड़ता हूँ? बच्चे खुद ही भाग जाते हैं, मैं तो नहीं किसी को भगाता। वो भगाने वाला है या थमाने वाला है? थमाने वाला है।

तो देखो, ऐसा प्रवृत्तिमार्ग का निराकारी सो साकारी बाप, जिसकी यादगार 'शिवलिग' दुनिया में सार्वभौम है, विदेशों की खुदाइयों में भी मिला है, वो (शिव) बाप (उसे) बिचारा 63 जन्मों का बहुत भटका हुआ है। वो बाप बिचारा बोलता है। संगमयुग में भी बहुत भटका हुआ है; शूटिग करेगा कि नहीं? (किसी ने कहा- करेगा) सत्य-असत्य का युद्ध, महाभारत युद्ध होता है या नहीं होता है? (किसी ने कहा- होता है) तो बहुत भटका हुआ बिचारा बोलता है। क्या बोलता है? कि ये बच्चियाँ जाती हैं सर्विस फील्ड पर, समझाती हैं, कोई को भी युक्ति से पूरा तीर नहीं लगाती हैं। कौन-सी बच्चियों की तरफ़ इशारा किया? किस समय की बात है? 1966 की बात। ये बच्चियाँ कोई को पूरा तीर नहीं लगातीं कि ये बाप है। कौन-सा बाप? जो (आधा कल्प में) जन्म-जन्मान्तर विधर्मियों से, झूठे धर्म वालों से, विदेशियों से टक्कर लेता रहा है। सत्य है; इसलिए सदा टिका हुआ रहा है। युद्ध में स्थिर रहा है या भाग खड़ा हुआ? सदा स्थिर रहा है। हिस्ट्री देख लो। उसकी पहचान देना, उसको जानना, उसको परखना, उनको समझना, ये तो बिलकुल सहज है। 'उनको' क्यों कहा? 'उसको' क्यों नहीं कहा? आगे वाला पार्ट तो है दूर का; लेकिन 'उसको' कहना चाहिए, एक को कहना चाहिए, 'उनको' क्यों कहा? (किसी ने कहा- एक से ज़्यादा) हाँ! क्योंकि उसमें तीन आत्माएँ पार्ट बजाती हैं, तो 'उनको' कहें या 'उसको' कहें? (किसी ने कहा- उनको) उनको समझना और समझाना बिलकुल सहज है। ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत, ये (त्रिमूर्ति शिव वाली) बात मानते हो त्रिमूर्ति

में?

कौन-सी मूर्ति है ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत? (किसी ने कहा- शिवलिग) हाँ, त्रिमूर्ति में जो ऊपर में शिवलिग रखा हुआ है, वो अव्यक्त मूर्ति, जिसका व्याख्यान भगवत गीता में भी दिया हुआ है, वो अव्यक्त मूर्ति भगवान है। अव्यक्त क्यों है? अव्यक्त इसलिए है कि उसमें इन्द्रियाँ दिखाई नहीं देतीं। किसमें? उस शिवलिग में। शरीर का बड़ा रूप लिगरूप धड़ तो दिखाई देता है; लेकिन (उसकी मनसा में) उसे इन्द्रियाँ हैं ही नहीं। वो ही भगवान है। अच्छा, वो भगवान सबका ही बाप है। सबका माने कितने का? 500-700 करोड़ का बाप है तो बेहद का बाप है या हद का बाप है? (किसी ने कहा- बेहद का) क्राइस्ट को 200-250 करोड़ दुनिया के मनुष्य अपना बाप मानते हैं, वो भी हद का बाप है; लेकिन ये जो बाप है, जो त्रिमूर्ति में ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत के रूप में दिखाया गया है, ये सबका बाप है, सभी आत्माओं का बाप है। सभी आत्माओं का बाप ज्योतिबिन्दु इसमें है या नहीं? है। सभी आत्माओं का बाप है। कि चलो, ब्रह्मा द्वारा वर्सा मिलना चाहिए ना! सभी आत्माएँ कहेंगी। कहाँ चलो? सभी आत्माओं का बाप जहाँ पार्ट बजाय रहा है, जिस तन में, मुकर्रर रथ में, वहाँ चलो। ब्रह्मा द्वारा वर्सा मिलना चाहिए ना! अरे, ब्रह्मा दादा लेखराज का तो शरीर छूट गया। तो कौन-से ब्रह्मा की बात है? (किसी ने कहा- प्रजापिता ब्रह्मा) ब्रह्मा के नामधारी तो बहुत हैं, 4 मुख हैं जो ब्रह्मा सो विष्णु भी बनते हैं, विष्णु के रूप में सहयोगी भुजाएँ बनते हैं- कोई राइटियस, कोई लेफ्टिस्ट। (ऊँचे ते ऊँचे) परंब्रह्म की सहयोगी भुजाएँ तो हैं ना! तो ब्रह्मा द्वारा वर्सा मिलना चाहिए, वहाँ चलो। वहाँ माने कहाँ चलो? 500-700 करोड़ मनुष्य विदेशों में, विदेशी धर्मखण्डों में ज़्यादा रहते हैं या भारत में रहते हैं? अरे, ढेर-के-ढेर मनुष्य कहाँ रहते हैं- विदेशों में रहते हैं या भारत में रहते हैं? विदेशों में रहते हैं। तो वो बोलें कि चलो, ब्रह्मा द्वारा वर्सा मिलना चाहिए ना! बेहद के बाप का वर्सा मिलना चाहिए। कौन बेहद का बाप? (किसी ने कहा- प्रजापिता) सिर्फ प्रजापिता बुद्धि में बैठ जाता है! आत्माओं का बाप (शिव) और मनुष्यों का भी बेहद का कम्बाइण्ड बाप, उसके पास चलो, उसका नाम भी 'ब्रह्मा' है; क्योंकि जिस तन में मैं प्रवेश करता हूँ उसका नाम 'ब्रह्मा' देता हूँ। "अगर दूसरे में आवे तभी भी उनका नाम 'ब्रह्मा' रखना पड़े।"(मु.ता.17.3.73 पृ.2 अंत) तो पहले-2 किस तन में प्रवेश करता है? परम्ब्रह्म में प्रवेश करता है। वो मीडिया है, तो उसके द्वारा मुक्ति-जीवन्मुक्ति का बेहद का वर्सा मिलना चाहिए। मीडिया बनकर कहाँ बैठा हुआ है? ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत मनुष्य-सृष्टि रूपी झाड़ में ऊँचाई पर बैठा हुआ है, उसकी तरफ इशारा किया कि चलो, ब्रह्मा द्वारा मुक्ति-जीवन्मुक्ति का वर्सा मिलना चाहिए। ये बाप का बेहद का वर्सा है। अच्छा, पहले भी था ना! ये बेहद का वर्सा देने वाला बाप पूर्व कल्प में भी था या नहीं था? (किसी ने कहा- था) पूर्व कल्प में भारत को (खास) वर्सा मिला हुआ था ना! आज 5000 वर्ष हुआ, वो बेहद का मुक्ति-जीवन्मुक्ति का वर्सा इस ब्रह्मा द्वारा मिला हुआ था। ये परम्ब्रह्म रूपी अव्वल ब्रह्मा मुक्ति और जीवन्मुक्ति का वर्सा दिलाने के लिए मीडिया है। इस मीडिया से हो करके (सबको) ही गुजरना पड़ेगा। सारी दुनिया की आत्माएँ महामृत्यु के समय किसको याद करेंगी- निराकार ज्योतिबिन्दु को याद करेंगी या साकार को याद करेंगी? निराकार ज्योतिबिन्दु को याद करना सहज है या साकार को याद करना सहज है? साकार को याद करना सहज है। पूर्वजन्मों की आदत पड़ी हुई है, साकार सम्बंधों को याद करते हैं। तो उसकी याद हर मनुष्यमात्र में महामृत्यु के समय समाई हुई होगी। वो याद ही मनुष्य-आत्माओं को बाप की तरफ़ आकर्षित करेगी; इसलिए वो आकर्षण करने वाला मीडिया (संगमयुगी) 'कृष्ण भगवान' के नाम से गाया हुआ है; परन्तु व्याख्याकारों ने अर्थ का अनर्थ कर दिया। क्या गलत अर्थ कर दिया? आकर्षण करने वाले का नाम क्या दिया? 'कृष्ण' और उसको द्वापर के अंत में ठोंक दिया। है कहाँ की बात? (किसी ने कहा- पुरु.

संगमयुग की) जो सारी दुनिया की मनुष्य-आत्माओं को अपनी ओर आकर्षित करता है।

अभी 84 जन्म आकर पूरा हुआ है। ये चक्कर देखो और फिर बाबा ब्रह्मा द्वारा हमको ये वर्सा देते हैं। देखो, हम ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं ना! क्या करते हैं? बाप से बेहद का वर्सा लेते हैं, पढ़ाई पढ़ते हैं- मनुष्य से देवता बनने की, राजयोग सीखने की। ऐसा तो कभी नहीं होता कि इंजीनियर की पढ़ाई, डॉक्टर की पढ़ाई यहाँ पढ़ें और हमको कहा जाए- अगले जन्म में इंजीनियर, डॉक्टर बन जाना। तो कोई पढ़ाई पढ़ेगा? भगवान के लिए क्या समझते हैं? कि भगवान आकर गीता-ज्ञान देता है, वो गीता का ज्ञान हम जन्म-जन्मान्तर सुनते और पढ़ते हैं और कोई-न-कोई जन्म में, भविष्य में हमारी मुक्ति हो जावेगी। ऐसा नहीं है। ये तो अंधश्रद्धा है। भगवान अंधश्रद्धा नहीं सिखाते। श्रद्धा-विश्वास तो अच्छी चीज़ है; लेकिन अंधी श्रद्धा, अंधा विश्वास ये नहीं सिखाते। हमको राजयोग सीखना है। राजयोग सीख करके हम यहीं राजा बनेंगे। यहीं इस दुनिया की मनुष्य-आत्माओं के ऊपर, सब धर्म की आत्माओं के ऊपर कण्ट्रोलर बनेंगे। सारी दुनिया प्रैक्टिकल में हमारे कण्ट्रोल में चलती हुई दिखाई देगी। कहाँ? यहाँ पुरु. संगमयुग में। हम विश्व के बादशाह बनेंगे। विश्व के बादशाह बनेंगे तो विश्व-धर्मों की जो और-2 आत्माएँ हैं, वो हमारे कण्ट्रोल में आएँगी या नहीं आएँगी? आएँगी। तो आओ, आ करके राजयोग के द्वारा ये राजाई का ऊँचे-ते-ऊँचा विश्व की बादशाही का वर्सा ले लो।

यह (सारे विश्व की) राजाई का वर्सा कोई भी धर्मपिताओं ने नहीं सिखाया, कोई मनुष्यमात्र ने नहीं सिखाया। राजाई करना, राजाई की पढ़ाई किसी ने नहीं पढ़ाई। सिवाय एक परमपिता परमात्मा के कोई भी मनुष्यमात्र इन्द्रिय जीते जगतजीत की पढ़ाई नहीं पढ़ाय सकता। बस, तुम बच्चे जैसे कि ये झट-पट हरेक के ऊपर जादू कर देते हो। दुनिया की हर आत्मा यही रास्ता पकड़ेगी और ये राजयोग सीखने में, सिखाने में टाइम नहीं लगेगा, झट-पट ये काम होगा। ऐसा जादू अभी तुम करते नहीं हो। ऐसा जादू नहीं करते हो तो फिर बाबा क्या करेंगे! क्या विचार, अभी यहाँ से बाहर निकलते हो तो कहाँ जाते हो? (किसी ने कहा- मायावी दुनिया में) अभी बैठो सात रोज़। अभी जो सीखना है, जो बाप प्रैक्टिकल में शरीर की इन्द्रियों के साथ सम्बंध जुड़वा करके राजयोग सिखाय रहे हैं, वो राजयोग की पढ़ाई सात दिन बैठ करके फिर सीखो। एक अव्यक्त वाणी में, कुमारियों की समर्पण समारोह की भट्ठी हो रही थी, उसमें अव्यक्त बापदादा ने बोला- ऐसे नहीं समझना- यह पहला समर्पण समारोह और आखिरी समर्पण समारोह है। अभी दुबारा भी समर्पण समारोह होगा। "अभी और भी कोई समर्पण समारोह मनाना है वा मना लिया बस फिनिश हुआ? तो बापदादा यही कहेंगे कि यह पूरा ग्रुप बंधनमुक्त का समर्पण समारोह मनावे।" (अ.वा.21.11.98 पृ.9 अंत) तो समर्पण होने से पहले भट्ठी भी कराई जाती है या नहीं? (किसी ने कहा- कराई जाती है) अभी जिन्होंने भट्ठी कर ली, छोटी-से-छोटी राजधानी स्थापन होगी, 40 वर्ष पूरे होंगे, तो उस राजधानी में एड होने वाले ब्राह्मण सो देवताओं को दुबारा भट्ठी करनी पड़े या नहीं करनी पड़े? करनी पड़ेगी। उस भट्ठी में पक्का-2 बुद्धि में बैठेगा- जो इन आँखों से देखेगा बाप को, जो इन कानों से दो शब्द भी सुनेंगे, बाप के द्वारा बोले हुए दो शब्द, उनकी बुद्धि में पक्का बैठ जावेगा, दिलोदिमाग में बैठ जावेगा कि मेरा बाप मेरे को एवरलास्टिंग मिल गया। ऐसा बाप का बच्चा बनकर जन्म लेंगे। जिसकी भविष्य में 2500 वर्ष तक कभी मृत्यु होगी ही नहीं, स्वेच्छा से शरीर रूपी कपड़ा उतारेंगे और स्वेच्छा से शरीर रूपी कपड़ा धारण करेंगे। उसको मृत्यु कहेंगे? नहीं कहेंगे। तो अभी बैठो, सात रोज़ पक्का हो जाओ। जब पक्के ब्राह्मण हो जाएँगे तब पक्के देवता बनेंगे; नहीं तो फिर भूल जाएँगे।

कहते हैं- ब्रह्मा ने सृष्टि रची। एक बार रची, पसंद नहीं आई, बिगाड़ दी। सन् 1936-37 में रची, पसंद

नहीं आई, तो फिर सन् 1947 में ब्राह्मणों की नई सृष्टि रची या नहीं रची? (किसी ने कहा- रची) फिर 1976 के लिए घोषणा कर दी- पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना। तो ब्राह्मणों की पुरानी दुनिया का विनाश, एडवांस पार्टी के द्वारा सन् 1976 से बेसिक में विघटन होने लगा और एडवांस ब्राह्मणों का नया संगठन शुरू हो गया। अभी क्या बोला? अभी फिर बोला- तुम बच्चों को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में, सतोप्रधान दुनिया में/सतोप्रधान राजधानी में जाने में कम-से-कम 40(-50) वर्ष लगते हैं। "तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।"(मु.ता.5.10.79 पृ.2 मध्यांत) तो कब पूरे होते? सन् 2017/18 (से 2027-28) में। उसका नाम ही है- सत् रह। कौन रहेगा? जो सच्चा होगा वही रहेगा। जिस सच्चे ने जन्म-जन्मान्तर इस झूठी दुनिया वालों से टक्कर ली है और संगमयुग में भी टक्कर ली या नहीं ली होगी? ज़रूर ली होगी। तभी तो सत्यनारायण की कथा गाई हुई है। घर-2 में गाई जाती है या कोई एक घर में गाई जाती है? (किसी ने कहा- घर-2 में) तो देखो, सात रोज़ पक्का करो, नहीं करेंगे तो फिर भूल जाएँगे। ये 40(-50) वर्ष के बाद जो नई राजधानी स्थापन होगी, उसमें पक्की भट्ठी नहीं की, फाउण्डेशन पक्का नहीं डाला तो क्या होगा? फिर पुरुषार्थ की बिल्डिग गिर जाएगी। 84 जन्मों की शूटिग करने वाली जो बिल्डिग तैयार होती है, भट्ठी में फाउण्डेशन पड़ता है, वो फिर कैंसिल हो जाएगी। माना 3 बार ब्रह्मा ने सृष्टि रची और तीनों बार बिगाड़ दी। सन् (2027/28) में 8 की छोटी राजधानी तैयार होती है और वो बढ़ते-3, 108 राजाओं की माला की राजधानी का संगठन तैयार हो जाता है। तो पूरी राजधानी कब स्थापन होगी? सन् 2028 में। चौथी बार बिगाड़ी नहीं जाएगी, पुरानी दुनिया के बीच नई दुनिया की पक्की-2 राजधानी 2500 वर्ष के लिए स्थापन हो जाएगी। कोई भी विधर्मी, कोई भी विदेशी, कोई भी विदेशी धर्मसत्ता, कोई भी विदेशों की पावरफुल-से-पावरफुल राजधानी, महाशक्ति क्यों न हो- अमेरिका महाशक्ति कही जाती है न, वो भी जीत नहीं सकेगी, ऐसा संगठन पावरफुल बन जावेगा। तुम ब्राह्मणों का संगठन रूपी किला ऐसा पावरफुल बन जावेगा जिसमें कोई भी विकारी पाँव रख ही नहीं सकेगा। "यह किला ऐसा बन जावेगा जो कोई भस्मासुर अंदर आ न सके।" (मु.ता. 2.5.73 पृ.2 मध्यांत) ओमशांति।

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya